International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 771-777

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 771-777
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2016
Accepted: 17-08-2016

Suraj Pratap
UGC Net/JRF History,
Research Scholar
Srivenkateshwara University
Gajraula, Uttar Pradesh,
India.

Correspondence
Suraj Pratap
UGC Net/JRF History,
Research Scholar
Srivenkateshwara University
Gajraula, Uttar Pradesh,
India.

प्राचीन बौद्ध एवं पुरातात्विक नगर

Suraj Pratap

Abstract
महाजनपद काल से ही सारनाथ अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाये हुए है। वाराणसी नगरी में स्थित यह स्थान बौद्धों का प्राचीन तीर्थ स्थल रहा है। पहले यहाँ घना वन था जिसमे मृग विहार किया करते थे। ज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान् बुद्ध ने अपना पहला उपदेश इसी स्थान पर दिया था। पुरातात्विक खोजों के कारण ही प्राचीन स्मारक एवं पुरास्थलों की पहचान हो पाई है। बौद्ध ग्रन्थो, चीनी यात्रियों के विवरणों तथा पुरातात्विक खोजों के कारण सारनाथ का वास्तविक स्वरुप आज विश्वपटल पर उपस्थित हो पाया है, एवं आगे भी नवीन स्थलों व पुरातात्विक उद्घाटनो की पूर्ण संभावनाएं विद्यमान हैं।

Keywords: Saarnath baudh puratativik

Introduction
काशी अथवा वाराणसी से लगभग 10 कि०मी० दूर स्थित सारनाथ प्राचीन बौद्ध तीर्थ रहा है। यह स्थान वाराणसी शहर के उत्तर पूर्व में गंगा व गोमती नदियों के संगम के पास प्राचीन काल से ही स्थित रहा है। सारनाथ अपने लम्बे इतिहास के दौरान मृगदाब, मृगदया, ऋषिपत्तन एवं इसिपतन इत्यादि नामो से जाना जाता रहा है। सन 1905 में पुरातत्व विभाग ने यहाँ खुदाई का काम किया, जिस कारण उस समय बौद्ध धर्म के अनुयायियों और इतिहास वेत्ताओं का ध्यान इस पर गया था। वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग 28 सारनाथ को अन्य शहरों से जोड़ता है।

इसका प्राचीन नाम ऋषिपतन था जिसका अर्थ "ऋषि का पतन" से है अर्थात वह स्थान जहां किसी एक बुद्ध ने गौतम बुद्ध सम्बोधि को जान कर निर्वाण प्राप्त किया था। [1]

मृगों के विचरण करने वाले स्थान के आधार पर इसका नाम मृगदाव पड़ा था, जिसका विवरण न्रिग्रोधमृग जातक में भी आया है। [2]

बुद्धघोष के अनुसार ऋषि लोग हिमायल से वायु द्वारा यहाँ उतर कर विश्राम करते थे। इसलिए ऋषिपतन (इसिपतन) नाम पड़ा। यहाँ मृगो को अभय दान दिया गया था।[3] आधुनिक नाम सारनाथ की उत्पत्ति "सारंगनाथ" (मृगो के नाथ) अर्थात गौतम बुद्ध से हुयी है।

ह्वेनसांग ने ऋषिपतन का चीनी नाम "सिन-जेन-लु-ये-युवान" दिया है जिसका संस्कृत प्रतिरूप "ऋषिपतन मृगदाव" होता है। दिव्यावदान में भी यही रूप है।[4]

इतिहास

बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना उपदेश यहीं पर दिया था। जिसे धर्मचक्र-प्रवर्तन भी कहा जाता है। बुद्ध ने प्रथम उपदेश (लगभग 533 ईoपूo) से 300 वर्षों बाद तक का इतिहास अज्ञात है क्यूंकि उत्खनन से इस काल का कोई भी अवशेष प्राप्त नही हुआ है।[5] आगे चलकर मौर्य युग में ही धर्मराजिका स्तूप, धमेख स्तूप एवं सिंह स्तम्भ इत्यादि का निर्माण अशोक के काल में हुआ था । सिंहो की मूर्ति वाला भारत का राजचिन्ह सारनाथ के अशोक स्तम्भ के शीर्ष से ही लिया गया है। शुंग काल का कोई लेख हमें प्राप्त नही हुआ है। प्रथम शताब्दी में कुषाण काल में जाकर पुनः बौद्ध धर्म की उन्नति हुयी। कनिष्क के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में भिक्षु बल ने यहाँ एक बोधिसत्व प्रतिमा की स्थापना की थी। गुप्तकाल में इस स्थान का पर्याप्त विकास हुआ, उस समय यह मथुरा के अतिरिक्त उत्तर भारत में कला का सबसे बड़ा केंद्र था। ह्वेनसांग ने हर्षकालीन सारनाथ का विवरण दिया था। सन 1017 ईo में महमूद गजनबी के वाराणसी आक्रमण के समय सारनाथ को क्षति पहुचाई गयी थी। सन 1026 ईo में सम्राट महिपाल के शासन काल में स्थिरपाल और बसंतपाल नामक दो भाइयों ने धर्मराजिका स्तूप एवं धर्मचक्र का उद्धार किया था। इसके उपरान्त गहड़वाल वंशीय गोविन्दचन्द्र की पत्नी रानी कुमारदेवी ने सारनाथ में एक विहार बनवाया था।[6] उत्खनन से प्राप्त एक अभिलेख से भी इसकी पुष्टि होती है।[7] ऐतिहासिक आधार पर ही यहाँ स्थित चौखण्डी स्तूप में बाबर के बेटे हुमायूँ ने छिपकर शरण ली थी। जिससे उसकी जान बची थी। अकबर (हुमायूँ का पुत्र) ने सन 1588 ईo में उसी स्मृति में चौखण्डी के उपरी भाग (शिखर) को बनवाया था।[8]

बुद्ध का धर्म प्रचार

बोधगया में सम्बोधि प्राप्त करने के पश्चात महामानव बुद्ध ने सारनाथ पहुचकर अपना प्रथम धर्म उपदेश(धर्मचक्र प्रवर्तन सुत्त) [9] दिया था। बुद्ध का सारनाथ में प्रथम उपदेश उनके पांच साथियों ने ग्रहण किया था। श्रेष्ठी पुत्र यश, सारनाथ में बुद्ध के छठवे शिष्य बने। ये सभी ऐसे शिष्य थे, जिन्होंने इस लोक में पहली बार त्रिशरण ग्रहण किया था। इसी लिए इन्हें "तेवाचिक" उपासक भिक्षु कहा गया था। तत्पश्चात चार नागरिकों और पचास जनपदों ने भी यहीं दीक्षा ग्रहण की थी। इस प्रकार सारनाथ में साठ लोगों ने भगवान् बुद्ध की शिक्षाओं को ग्रहण किया था। तथागत बुद्ध को सम्मिलित कर उस समय इस लोक में कुल 61 "अर्हन्त भिक्षु" थे। [10] अस्सजी एवं पुनवसु नामक दो भिक्षुओं के अनुयायी, जो कुत्सित प्रवत्ति के थे, सन्यासी के रूप में यहाँ रहते थे। इस भिक्षुओं की एक उपस्क द्वारा निंदा करने पर बुद्ध ने सारिपुत्र और मौद्गाल्यायन को उन्हें दण्डित करने भेजा था। [11]

बुद्ध ने सारनाथ में अपने 5 साथियों को जो उपदेश दिए थे, वह इस संसार में बहुत प्रसिद्द हुए थे जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है- "हे भिक्षुओ दुःख आर्य सत्य है, जन्म भी दुःख है, जरा भी दुःख है, व्याधि भी दुःख है, मरण भी दुःख है, अप्रियों का संयोग दुःख है, प्रियों का वियोग भी दुःख है, इच्छा करने पर किसी (वस्तु) का न मिलना भी दुःख है। संक्षेप में पांच उपादनस्कंध(रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान) ही दुःख हैं। भिक्षुओ ! दुःख-समुदय (दुःख-कारण) आर्य सत्य है। यह जो तृष्णा है- फिर जन्मने की, खुश होने की, रागसहित जहाँ तहां प्रसन्न होने वाली; जैसे की काम तृष्णा, भव (जन्म) तृष्णा, विभव तृष्णा। भिक्षुओं ! यह है दुःख निरोध आर्य सत्य। जोकि उसी तृष्णा का सर्वथा विराग होना, निरोध=त्याग=प्रतिनिस्सर्ग=मुक्ति=न लीन होना। भिक्षुओ ! यह है दुःख निरोध की ओर

जाने वाला मार्ग (दुःख- निरोध- गामिनी- प्रतिपद) आर्य सत्य। यही आर्य अष्टांगिक मार्ग है। [12]

बौद्ध ग्रन्थो एवं चीनी यात्रियों का विवरण

बौद्ध साधकों के लिए यह स्थान बुद्ध के समय और इसके पश्चात भी महत्वपूर्ण बना रहा था। महावंश से हमें यह ज्ञात होता है कि दूसरी शताब्दी ई०पू० जब लंका के अनुराधपुर में महास्तूप (महाथूप) का शिलान्यास समारोह मनाया गया तो सारनाथ के भिक्षु संघ को भी उसमे भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया और इस विहार से 12000 स्थविर लंका में इस अवसर पर गये थे।[13] चीनी यात्री ह्वेनसांग सातवी शताब्दी ई० में वाराणसी की वरुणा नदी से 10 ली० उ०पू० में चलकर यहाँ पंहुचा था। [14] ह्वेनसांग कहता है कि सारनाथ विहार का भवन उस समय आठ भागो में विभक्त था जो सब एक परिकोटे से घिरे हुए थे। उस समय यहाँ सम्मितिय सम्प्रदाय के 1500 भिक्षु निवास करते थे। उपदेश देती हुयी मुद्रा में भगवान् बुद्ध की एक मानवाकार मूर्ति का उल्लेख युवान चुवांग ह्वेनसांग ने किया है वह कहता है कि जिस विहार में यह मूर्ति स्थापित थी, उसके उ० पश्चिम में अशोक द्वारा निर्मित एक स्तूप के भग्नावशेष उस समय धरती के 100 फुट ऊपर विद्यमान थे। यही प्रसिद्ध धमेख स्तूप है। इसके सामने 70 फुट लम्बा एक स्तम्भ था, जो अत्यन्त चमकीला और स्निग्ध था। यह स्तम्भ उस स्थान पर गड़ा हुआ था जहां भगवान् बुद्ध ने प्रथम धर्मोपदेश किया था। इसी स्थान के समीप 500 प्रत्येक- बुद्धों ने निर्वाण प्राप्त किया था। इसी प्रकार अन्य स्तुपो का भी उल्लेख ऋषिपतन मृगदाव(सारनाथ) के आस-पास इस चीनी यात्री ने किया है। [15]

फाहियान के अनुसार जिस ऋषि के नाम पर इस स्थान का नाम ऋषिपतन पड़ा, वह एक प्रत्येक-बुद्ध थे। यह जानकार की भगवान् बुद्ध का अविर्भाव होने वाला है इस ऋषि ने इस उद्यान में अपने प्राण त्याग दिए थे। ह्वेन्साग ने इस सम्बन्ध में निग्रोधमिग जातक का भी उल्लेख किया है। [16]

सारनाथ का पुरातात्विक महत्व

सारनाथ में हुयी खुदाई में अनेक महत्वपूर्ण स्मारक प्राप्त हुए हैं ये भग्नावशेष अशोक महान के काल से लेकर पाल वंश एवं उसके बाद भी कन्नौज के गहड़वालों (12 वी शती) तक प्राप्त होते हैं। 1851-52 ई० में मेजर मारख़म किटटो ने सारनाथ का उत्खनन करवाया जिसमे उन्होंने धम्मेख स्तूप के पास पश्चिम वाले विहार को खोज निकाला। इसी क्रम में 1853 ई० के जनवरी मास में श्री ई० थॉमस और श्री फिट्ज़ एडवर्ड हाल द्वारा इस उत्खनन को जारी रखा गया, उसके बाद श्री एफ० ओ० ओर्टेल (1904-05) सरजान मार्शल (1907-09) श्री हरग्रीब्स (1914-15) ने उत्खनन कार्य जारी रखा।[17]

1. मूलगंधकुटी विहार

इस विहार का निर्माण उस स्तन पर किया गया था जहां पर बुद्ध सारनाथ में ठहरते थे, यहीं मूलगंधकुटी विहार का निर्माण किया गया था। जिसके पुरावशेष धर्मराजिका स्तूप के पास स्थित है। इसे मुख्या मंदिर भी कहा जाता है। श्री दयाराम साहनी का मत है की यह मूलगंधकुटी विहार बोधगया के "महाबोधि विहार" के सामान रहा होगा। इस विहार की दक्षिणी कोठी से गुप्त शैली में बुद्ध की अभयमुद्रा की मूर्ति भी प्राप्त हुयी थी। इस मुख्या विहार का वर्तमान स्वरुप गुप्कालीन माना जाता है, उल्लेखनीय है की सम्राट अशोक ने उपगुप्त के साथ इस बौद्ध तीर्थ की यात्रा की थी।[18]

2. धर्मराजिका स्तूप

मूलगंधकुटी विहार के पास में दक्षिण की ओर धर्मराजिका स्तूप के ध्वंसावशेष विद्यमान हैं। यही एक मात्र स्तूप था जहां बुद्ध की अस्थि मंजूषा प्राप्त हुयी थी। यह प्रस्तर मंजूषा कलकत्ता के संग्रहालय

में सुरक्षित है। सारनाथ के इस विशालतम अस्थि धातु स्तूप का पांच बार संवर्धन या विशालीकरण हुआ था। इस स्तूप के मूल भाग का निर्माण अशोक ने करवाया था। उस समय इस का व्यास 13.48 मी० (44 फुट 3 इंच) था। दूसरा परिवर्धन हूणों के आक्रमण के पश्चात पाचवी-छठी शताब्दी में हुआ। इस समय इसके चारो ओर 16 फुट (4.6 मी०) चौड़ा एक प्रदक्षिणा पथ जोड़ा गया।

3. धम्मेक स्तूप

धर्मराजिका स्तूप से लगभग 200 फीट दूर सारनाथ का सबसे ऊँचा धम्मेख स्तूप विद्यमान है। चौदहवी शताब्दी विक्रमी के प्रसिद्व जैन आचार्य जिनप्रभु सूरी ने संभवता धमेख स्तूप को ही धर्मेक्षा कहकर पुकारा और उसे वाराणसी से 3 कोस दूर बताया है।[19] स्तूप की आधार सहित ऊँचाई 143 फीट और धरातल पर इसका व्यास 93 फीट है। धरातल से 36 फीट 9 इंच ऊँचाई तक पाषाण शिलाओं से बना है।

कनिघम ने सर्वप्रथम इस स्तूप के मध्य खुदाई कराकर 0.91 मी० (3 फुट) नीचे एक शिलापट्ट प्राप्त किया था। इस शिलापट्ट पर सातवी शताब्दी की लिपि में "ये धर्महेतु प्रभवा" मंच अंकित था। इस स्तूप में प्रयुक्त ईटें 14 ½ इंच * 8 ½ * 2 ¼ इंच आकार की हैं।

4. चौखण्डी स्तूप

वाराणसी नगर से सारनाथ को जाने पर सारनाथ के मुख्य भग्नावशेषों से लगभग ½ कि० मी० पहले बायीं ओर विशाल चौखण्डी स्तूप विद्यमान है। इस स्तन पर बुद्ध ने अपने पांच शिष्यों को सबसे प्रथम उपदेश सुनाया था जिसके स्मारक स्वरुप अशोक ने इस स्तूप को बनवाया था। ह्वेनसांग ने इस स्तूप की स्थिति सारनाथ से 0.8 कि० मी० दक्षिण-पश्चिम में बताई है, जो 91.44 मी० ऊँचा था। [20] चार बार विशालीकरण होने के कारण यह चौखण्डी स्तूप कहलाया। ऊपर का खंड नष्ट हो गया है लेकिन तीन खंड संवर्धन अब भी दिखाई पड़ते हैं। इस स्तूप के ऊपर एक अष्टपाश्वीय बुर्जी बनी हुयी है। इसके उत्तरी दरवाजे पर पड़े हुए पत्थर पर फारसी में एक लेख उल्लिखित है, जिससे ज्ञात होता है कि टोडरमल के पुत्र गोवर्धन ने सन 1589 ई० (996 हिजरी) में इसे बनवाया था। लेख में वर्णित है कि हुमायूँ ने इस स्थान पर एक रात व्यतीत की थी, जिसकी यादगार में इस बुर्ज का निर्माण संभव हुआ।[21]

5. यश प्रवृज्या स्तूप

मूलगंधकुटी विहार के पास उत्तर की ओर एक ईटो से निर्मित विशाल स्तूप के गोलाकार धरातली अवशेष विद्यमान हैं। इसका संवर्धन और विशालीकरण भी 4 बार हुआ है। नीचे की ईटो के आधार पर इसे भी मौर्यकालीन माना गया है। उक्त स्तूप का अंतिम विशालीकरण दसवी शताब्दी इसवी में हुआ था। डा० सी० एस० उपासक का कथन है कि सारनाथ में पंचवर्गीय भिक्षुओं की दीक्षा के बाद छठवी दीक्षा "यश" की हुयी थी।

6. अशोक स्तम्भ

सम्राट अशोक द्वारा निर्मित प्रस्तर स्तम्भ मूलगंधकुटी विहार के निकट पश्चिम की ओर भग्न रूप में विद्यमान है। इसकी ऊँचाई प्रारम्भ में 17.55 मी० (55 फुट) थी। वर्तमान में इसकी ऊँचाई केवल 2.03 मी० (7 फुट 9 इंच) है। स्तम्भ का ऊपरी सिरा अब सारनाथ संग्रहालय में है। नीव की खुदाई करते समय यह पता चला की इसकी स्थापना 8 फुट * 16 फुट * 18 इंच आकार के पत्थर के चबूतरे पर हुयी थी।[22] इस पर ही मिलने वाले 4 शेरो को राष्ट्र चिन्ह के रूप में स्वीकार किया गया है। स्तम्भ के शीर्ष भाग का सबसे नीचे का भाग उल्टे कमल का, कमल कुम्भी आकार का है। जिसके ऊपर गोल कंठ भाग है जिसके ऊपर ऊँची चौकी है जिसमे हाथी, बैल, सिंह और अश्व गतिमान अवस्था

में बनाये गये हैं प्रत्येक दो पशुओ के बीच में 24 तीलियो वाला बुद्ध चक्र था।

इस स्तम्भ पर तीन लेख उल्लिखित हैं। पहला लेख अशोक कालीन ब्राहमी लिपि में है जिसमे अशोक ने कहा है कि, जो भिक्षु या भिक्षुणी संघ में फूट डालेंगे और संघ की निंदा करेंगे: उन्हें सफ़ेद कपडे पहनाकर संघ से बाहर निकाल दिया जायेगा। दूसरा लेख कुषाण काल का है। तीसरा लेख गुप्तकाल का है, जिसमे सम्मितीय शाखा के आचार्यों का उल्लेख किया गया है। [23]

7(i) विहार संघाराम 1(धर्मचक्रजिन विहार)

कन्नौज के गहड़वाल शासक गोविन्दचन्द्र (1114-1154) की रानी कुमारदेवी द्वारा बनवाया गया "धर्मचक्रजिन विहार" सबसे विशाल विहार था। इस विहार के पूर्व से पश्चिम लम्बाई 760 फुट थी।[24] इसके आँगन की फर्श पकी ईटों से ढकी थी जिसके तीन ओर कमरे निर्मित थे। विहार की कुर्सी 8 फुट ऊँची थी, यद्यपि भिक्षुओं के रहने के कक्ष अब ढह चुके हैं प्रवेश के लिए पूर्व की ओर दो सिंह द्वार थे जिनके बीच की दूरी 88.89 मी० (290 फुट) थी। [25] इस विहार के नीचे पूर्वकालीन तीन विहारों के अवशेष पाए ये हैं। पश्चिमी किनारे पर विहार संख्या 2 कुमारदेवी विहार के पूर्वी तोरण के सामने विहार संख्या 3 और दो सिंह द्वारो के मध्य जमीन के नीचे विहार संख्या- 4 हैं। इस विहार के पश्चिम की ओर एक पटी सुरंग (54.85 मी० लम्बी) मिली है। जिसकी चौडाई 1.83 मी० है। इसकी दीवारों में पत्थर और ईट की चिनाई है। यह सुरंग एक कमरे में जाकर समाप्त हो जाती है। यहाँ से प्राप्त सभी मूर्तियाँ मध्यकालीन हैं।

(ii) संघाराम 2

यह आरम्भिक गुप्तकाल का है। इसके मध्य में 27.69 मी० (90 फुट) का एक चौकोर आँगन था जिसके चारों ओर 0.99 मी० (3 फुट 3 इंच) आकार की छोटी दीवार थी जिसके ऊपर बरामदे के खम्बे उठाये गये थे। बरामदे के पीछे कक्षों की पंक्तियाँ थी जिनमे से अब केवल 9 कमरों के चिन्ह बचे हैं।[26]

(iii) संघाराम 3

यह कुषाणकालीन प्रतीत होता है जिस का कारण खम्बो पर बनी शैली है। दीवारों की औसत ऊचाई 3.04 (10 फुट) थी। इन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है यह इमारत दो मंजिल की रही होगी। उत्खनन से आँगन के बीच में 10 इंच गहरी व 7 इंच चौड़ी एक ढकी नाली के भी अवशेष मिले हैं।[27]

(iv) संघाराम 4

यह जहाँ स्थित था उसका आँगन भूमि से 4.42 मी० (14 फुट 6 इंच) नीचे था। उत्खनन में आँगन और बरामदे का कुछ भाग तथा पूर्व की ओर दो कोठरियों के अवशेष प्रकाश में आये हैं। बरामदे के खम्बो की पंक्ति संघाराम 3 की भांति 2 फुट 2 इंच ऊँची दीवार पर निर्मित थी। बरामदे की चौडाई 7 फुट 10 इंच तक थी। [28]

इन स्थलों के अतिरिक्त अकथा नामक स्थल का उल्लेख करना आवश्यक है जो कि सारनाथ के समीप ही नवीनतम उत्खनित स्थल है।

8. अकथा

यह पुरास्थल सारनाथ से 2 कि० मी० दक्षिण पश्चिम में स्थित है इस स्थल का उत्खनन प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० विदुला जायसवाल एवं डा० वीरेंद्र प्रताप सिंह के संयुक्त निर्देशन में उनके विभागीय सहयोगी डा० अशोक कुमार सिंह द्वारा फरवरी-अप्रैल 2002 के मध्य उत्खनन किया गया। [29] यह उत्खनन पुनः 2004 फरवरी-अप्रैल के मध्य प्रो० विदुला जायसवाल एवं लेखक के संयुक्त निर्देशन में सम्पन्न हुआ। नरोखर

नाला के दक्षिणी किनारे पर स्थित यह पुरास्थल 4 वर्ग कि० मी० में फैला हुआ है उत्खनन कार्य मुख्यतः अकथा- 1 और अकथा- 2 में किया गया है। उत्खनन में 4 संस्कृतक कालों की सामग्री प्रकाश में आयी है-

प्रथम काल: उत्तरी पूर्व कृष्ण मार्जित संस्कृति (प्री० एन० बी० पी० काल) लगभग 1200 ई० पू० से 600 ई० पू० तक।

द्वितीय काल: उत्तरी कृष्ण परिमार्जित संस्कृति (600 ई० पू० से 200 ई० पू० तक)

तृतीय काल: शुंग कुषाण काल (200 ई० पू० से 300 ई० तक)

चतुर्थ काल: गुप्तकालीन संस्कृति (300 ई० से 600 ई० तक)

बुद्ध काल के पश्चात राजनीतिक परिदृश्य

तीसरी शताब्दी ई० पू० में अशोक ने सारनाथ की यात्रा की तथा यहाँ कई स्तूप और सुन्दर प्रस्तर स्तम्भ बनवाए। चौथी शती ई० में चीनी यात्री फाहयान ने यहाँ 4 बड़े स्तूप और 5 विहारों का सन्दर्भ ग्रहण किया था। छठी शताब्दी ई० में हूणो ने इस स्तन पर आक्रमण करके यहाँ के प्राचीन स्मारकों को घोर क्षति पहुचायी। इनका सेनानायक मिहिरकुल था। सातवी शती में प्रसिद्द चीनी यात्री ह्वेनसांग ने [30] बौद्ध विहार तथा 100 हिन्दू देवालय देखे थे जो कि बौद्ध धर्म के पतनोन्मुख होने तथा प्राचीन हिन्दू धर्म के पुनरोत्कर्ष के परिचायक थे। 11 वी शती में महमूद गजनवी ने सारनाथ पर आक्रमण किया तथा यहाँ के स्मारकों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। 1194 ई० तुर्क सेनापति कुतुबुद्दीन ने यहाँ की बची खुची इमारतों व कलाकृतियों को नष्ट कर दिया था। केवल दो विशाल स्तूप ही छह शतियो तक अपने स्थान पर खड़े रहे।

सुझाव एवं निष्कर्ष

सारनाथ का पुरातात्विक महत्व बुध्काल से ही रहा है और समय की परिपाटी पर इसने अपने नाम को लगातार सुरक्षित बनाये रखा। ऐसा शायद इसलिए रहा क्यूंकि बुद्ध के समय ही यहाँ बौद्ध धर्म के बीज का बीजारोपण अच्छी तरह से कर दिया गया था। हालांकि इस बीज के वृक्ष बनने व समयचक्र में आने वाले अनेको आक्रमण रुपी तूफानों ने इसकी शाखाओं को ध्वस्त किया, किन्तु इसका समूल नाश न कर सका। आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता यह है की, पुरातत्वविदों एवं भारतीय जनमानस द्वारा इस प्राचीन संस्कृति को और अधिक विशुद्धता से विश्वपटल पर लाया जाये ताकि यह नगर अपनी प्राचीन परम्परा एवं संस्कृति को बचाये रख सके। यद्यपि भरत सरकार ने इसे पर्यटन नगर नगर के रूप में विकसित किया है, परन्तु अभी भी उस प्राचीन संस्कृति के अवशेष धरती के अन्दर छिपे पड़े हुए हैं उनको भी प्रकट करना शोध का विषय लगातार बने रहना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भट्टाचार्य बी० सी०, दि हिस्ट्री ऑफ़ सारनाथ (बनारस, 1924), i`0 47
2. निग्रोधमृग जातक, संख्या 12 (फाउसबोल संस्करण)
3. बुद्धघोष, पपंचसूदनी, जिल्द 2, i`0 65
4. दिव्यावदान, i`0 302
5. सिंह. डा० अशोक कुमार, उ० प्र० के प्राचीनतम नगर, i`0 59
6. इपिग्राफिका इण्डिका, भाग 9, i`0 325
7. आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, वार्षिक रिपोर्ट 1907-08, i`0 78

8. www.kashikatha.com/दर्शनीय-स्थल/सारनाथ-2/
9. दिव्यावदान, i`0 25
10. दिव्यावदान, i`0 23
11. विनय चुल्लवग्ग, 1.13
12. सांकृत्यायन. राहुल, बुद्धचर्या, धर्मचक्रप्रवर्तन सूत्र, गौतम बुक सेन्टर संस्करण 1930 (2010 नवीन), i`0 22-23
13. महावंस 29/31 (हिंदी अनुवाद)
14. वाटर्स: आन युवान चुआड़स ट्रेविल्स इन इंडिया, जिल्द 2, i`0 48
15. वही, i`0 47-49, 55-57
16. वही, i`0 49, 54-56
17. भिक्षु धर्मरक्षित, सारनाथ का इतिहास, i`0 104-14
18. दिव्यावदान, i`0 25
19. विविधतीर्थकल्प, i`0 74
20. सेमुअल बील, चाईनीज एकाउन्ट्स ऑफ़ इंडिया, भाग 3, i`0 297
21. आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, (वार्षिक रिपोर्ट), 1904-05, i`0 74 जनरल यू० पी० हि० सो०, भाग- 15, i`0 55-64
22. आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, (वार्षिक रिपोर्ट), 1904-05, i`0 69
23. वही, i`0 70
24. वही, 1907-08, i`0 45
25. वही, 1907-08, i`0 46
26. वही, 1907-08, i`0 54
27. वही, 1907-08, i`0 56
28. वही, 1907-08, i`0 59
29. वी० जायसवाल, अकथा :ए सैटेलाइअ सेटिलमेंट ऑफ़ सारनाथ, वाराणसी (रिपोर्ट ऑफ़ एक्सकैवेशंस कंडक्टेड इन द इयर 2002), भारती, अंक 26, 2000-2002, i`0 61-180